

पद ४५

(राग: जोगिया - ताल: केहरवा)

अवधूता शरण रिघाल्यें। देहींच ब्रह्मसुख फळलें। किति विस्मय
नवल हें झाले। ब्रह्मासी ब्रह्मपण आले॥ध्रु॥ आहे तें अस्ति
ब्रह्म। भासतें ते भाति ब्रह्म। विषयीसुख तें प्रिय ब्रह्म। हें अस्ति
भाति प्रिय ब्रह्म। नामरूप मिथ्या झालें॥१॥ वंध्यासुत लग्न
वन्हाडी। मृगजली भ्याली दिली बूडी। स्वप्नीचा तो नावाडी।
महावाक्य बोधुनी काढी। लटक्या मुखी सार्थक झालें॥२॥ माया
ही अर्थिक नाही। मार्ताण्डी मृगजल पाहीं। मग बंध मोक्ष तो
काई। ब्रह्मचि ब्रह्मसुख घेई। मौनाचें बोलणें सरलें॥३॥